Airo International Research Journal
Volume XVI, ISSN: 2320-3714
April, 2018
Impact Factor 0.75 to 3.19
UGC Approval Number 63012

भारतीय नवजागरण के परिप्रेक्ष्य में स्त्री-विमर्श

डॉ॰ ओमप्रकाश
एसोसिएट प्रोफेसर,
स्नातकोत्तर हिंदी विभाग,
आर.क.एस.डी. कॉलेज, कैथल (हरियाणा)

'ब्रह्मसमाज'. (1828) के संस्थापक राजाराम मोहनराय का एकमात्र उद्धेश्य समाज में फैली कुरीतियों को दूर करना था। स्त्री सशक्तीकरण के संदर्भ में राजाराम मोहनराय का योगदान स्तुत्य है। संवाद कौमुदी (1829) के माध्यम से उन्होंने सामाजिक कुरीतियों बाल-विवाह, सती प्रथा एवं जातिप्रथा का खुलकर विरोध किया। नारी की स्थिति और समाज में उसकी स्थिति क्या हो? इस पर राजाराम मोहनराय ने गहराई से सोचा, साथ ही विधवाओं के पुनर्विवाह पर जोर दिया। श्री आर0एन0 समद्वन के अनुसार जिस समय-स्त्री पराधीनता' के लेखक जे०एस० मिल अपनी बाल्यावस्था में थे उस समय समाज में नारी की भूमिका के विषय में अधुनातन विचार राजाराम मोहनराय ने प्रस्तुत किया था। 7 भारत के इतिहास में नारी की स्थिति में सुधार लाने का श्रेय राजाराम मोहनराय को है। उन्होंने स्त्री शिक्षा के साथ ही समाज में वैज्ञानिक चेतना का प्रसार, सती प्रथा जैसे अन्धविश्वासों का निर्मूलन एवं धार्मिक रूढ़ियों की जगह उदार आध्यात्मिक तथा मानवतावादी चिंतन को प्रश्रय देते हुए राष्ट्रीय नवजागरण की प्रक्रिया को गतिशील बनाया। भारतीय जनमानस में 'बंगदूत' के माध्यम से जन-जागरण का संदेश पहुंचाने का सार्थक प्रयास उन्होंने किया।

आधुनिक काल के निर्माताओं में महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुर के परम शिष्य आचार्य केशवचन्द्र सेन का नाम आदर से लिया जाता है। सन् 1857 में 'ब्रहम समाज' की सदस्यता ग्रहण करने के बाद उन्होंने स्त्री शिक्षा पर बल दिया। वह स्त्री की स्थिति में सुधार के प्रबल समर्थक थे। वे जानते थे कि स्त्री की स्थिति में सुधार लाए बिना किसी भी देश की उन्नति नहीं हो सकती। उन्होंने स्पष्ट कहा था कि हमारे देश की महिलाओं की स्थिति दयनीय है। इसलिए यदि भारत की हैसियत को अन्य राष्ट्रों के समकक्ष ऊपर उठाने की हमारे भीतर कोई आकांक्षा है तो हमें अपनी महिलाओं को अज्ञान और अंधविश्वास के मकड़जाल से बाहर निकालना होगा।' 2 शिक्षा के प्रबल समर्थक केशवचन्द्र सेन ने सन् 1863 में ब्रहमबन्धु सभा के तत्वाधान में घर पर ही महिलाओं के शिक्षण का प्रबन्ध किया। सन् 1867 में महिला टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज खोलकर शिक्षा के क्षेत्र में अभुतपूर्व क्रांति पैदा कर दी। समाज में नारी की स्थिति को सुधारने के लिए उन्होंने विधवा पुनर्विवाह का समर्थन किया। वह पहले समाज सुधारक थे, जिन्होंने रंगशालाओं के माध्यम से नारी जागृति की लौ जलाने का कार्य किया। 23 अप्रैल और 7 मई 1859 को उनके निर्देशन में 'विधवा विवाह' नाटक का सफल मंचन हुआ। आधुनिक भारत में स्त्री शिक्षा और स्त्री सशक्तीकरण के क्षेत्र में केशवचन्द्र सेन ने जिस दूरदृष्टि का परिचय दिया वह अपने आप में विशिष्ट है।

Airo International Research Journal
Volume XVI, ISSN: 2320-3714
April, 2018
Impact Factor 0.75 to 3.19
UGC Approval Number 63012

होने से रोका तथा विधवाओं परित्यक्ताओं की स्थिति में सुधार लाने के लिए 'शारदा सदन' बनंवाया। वास्तव में पंडिता रमाबाई ने नारी शक्ति को जगाने के लिए अपना सर्वस्व होम कर दिया। रमाबाई द्वारा दिए गए भाषण एवं उनकी रचनाएं आधुनिक नारी के लिए प्रेरणा का स्रोत है। इसमें कोई सन्देह नहीं है। विश्व धर्म प्रवर्तक श्री रामकृष्ण परमहंस की सहभागिनी मां शारदा देवी (1853-1920) अपने मातृत्व में एकदम निश्छल एवं ममतामयी नारी थी। मां शारदा यद्यपि कट्टर धर्मपरायण महिला थी वहीं दुःखी, शोषित एवं पीड़ित मानवता के प्रति सदैव समर्पित रहती थी। समाज में विधवाओं के ऊपर होने वाले अत्याचारों को देखकर वे द्रवित हो उठती थी। वह मानती थी नारी नरक का द्वार नहीं अपितु परम सत्य के मार्ग पर पुरुष की साथी होकर वह चल सकती है। जीवन मार्ग में शांति की खोज में निकले बटोहियों के लिए वे उचित मार्गदर्शन करती। जो भी उनके पास आता उनसे मातृत्व के साथ मिलती तथा उनके जीवन को खुशियों से भर देती। मारिट एलिजाबेथ नोबल (सिस्टर निवेदता) शारदा देवी से मिलकर अत्यंत संतुष्ट हुई थी। उनका जीवन श्री रामकृष्ण की आध्यात्मिक साधना में सहायक सिद्ध हुआ था। स्वामी विवेकानंद नारी की आजादी के प्रबल समर्थक थे। वे पुरुष एवं नारी को समान समझते थे। उनका मानना था कि देश की प्रगति के लिए नारी का शिक्षित होना आवश्यक है। 'ज्ञान ही महिलाओं को तथा देश को उनकी अवनति से बचा सकता है, दुर्दशा से ऊपर उठा सकता है।' 2 विवेकानंद ने गांव-गांव में पाठशालाएं खोल कर स्त्रियों को शिक्षित करने पर बल दिया जिससे की उनकी संतान द्वारा देश का गौरव बढ़ाया जा सके और देश में विद्या, ज्ञान और शक्ति का प्रसार हो सके। विवेकानंद भारतीय स्त्रियों की तरक्की का रास्ता, भारत के परम्परागत मूल्यों को ही मानते हैं। उनकी मान्यता थी कि स्त्रियों को ज्यादा से ज्यादा शिक्षित किया जाए जिससे उनका मानसिक एवं बौद्धिक विकास हो तथा वे स्वावलम्बी बन सकें। उन्होंने लिंगभेद को भुलाकर स्त्री-पुरुष समानता के आचरण पर बल दिया। लिंग के आधार पर भेदभाव करना निरर्थक है। वेदान्त दर्शन के आधार पर बताया कि पुरुष और स्त्री के बीच कोई तात्त्विक भेद नहीं है। स्त्री भी ब्रह्मज्ञान प्राप्त करने की समान अधिकारिणी है। उन्होंने नारी को मातृशक्ति । का पर्याय माना। आधुनिक भारत के स्त्री-मुक्ति आंदोलन ने निश्चित रूप से विवेकानंद के दार्शनिक एवं क्रांतिकारी विचारों से प्रेरणा प्राप्त की है।

संदर्भ सूची ----------

1. आर0एन0 समाधान, राजाराम मोहनराय, एशियन पब्लिकेशन सर्विस, नई दिल्ली 1982, पृष्ठ 12
2. अरुण कुमार मुखर्जी, केशव चंद्र सेन, प्रकाशन विभाग भारत सरकार, अगस्त 1995, पृष्ठ 7-8
3. हिरण्यमय बनर्जी, ईश्वर चंद्र विद्यासागर, साहित्य अकादमी 2004, पृष्ठ 32
4. वही पृष्ठ 42-43
5. शांति स्वरूप, बौद्ध सावित्रीबाई फुले, सम्यक प्रकाशन, द्वितीय संस्करण 2006, पृष्ठ 24
6. कल्पना गांगुली, झांसी की रानी लक्ष्मीबाई, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ 43

7. सोनिया गुप्ता (अनुवाद), सामाजिक क्रांति के दस्तावेज, पृष्ठ 485
8. वही पृष्ठ 850
9. प्रवाजिका आत्मप्राणा, सिस्टर निवेदिता, रामकृष्ण पेठ नागपुर 2001, पृष्ठ 32